रामायण की लोकप्रियता

वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री

यदि भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति में किसी ग्रंथ को अधिकतम समादर मिला है तो वह रामायण को ही मिला है। रामायण हर भाषा में और हर संस्कृति में किसी न किसी रूप में पाई जाती है।

वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन मानी जाती है। जैन धर्म में पउमचरिय सबसे प्राचीन है। पउमचरिय के बाद, रविषेण ने संस्कृत में पद्मचरित–पद्मपुराण लिखा। इसी प्रकार उत्तरपुराण में रामायण का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। परन्तु उत्तरपुराण और पद्म पुराण की कथाओं में थोड़ासा अंतर है। हरिवंश पुराण में रामायण की कथा संक्षेप में मिलती है। इसमें रामायण के मुख्य अंशों का विवेचन है। रामचन्द्र जैन धर्मानुसार मोक्ष गये। राम ने अपने जीवन में मोह-रागादि को किस प्रकार प्रश्रय दिया एवं अंतिम समय में किस प्रकार इनसे विरत हुवे यह देखने लायक है। इससे मानवीय जीवन का रहस्य मालूम होता है। रामायण के लोकप्रिय होने का यही कारण है।

रामायण के सभी मुख्य पात्र महान हैं। उनका जीवन आदर्श होता है। वे जहाँ जाते हैं, वह तीर्थस्थान बन जाता है। वे जो कुछ करते हैं वह आदर्श एवं अनुकरणीय बन जाता है।

कन्नड़ भाषा में रामायण की रचना हुई। कवि नागेन्द्र ने अभिनव पंप की रचना की जिसे आदि पंप का रूपान्तर माना जाता है। इस प्रसिद्ध ग्रंथ के अतिरिक्त अन्य रामायण भी कन्नड़ में लिखी गई हैं। मुनिश्री कुमुदचन्द्र की कुमुदेन्दु, चन्द्रसागर वर्णी की जिन रामायण, और एक अन्य लेखक की नोरवे रामायण काफी लोकप्रिय है।

तेलगु भाषा में भी अनेक लेखकों ने रामायण को लिपिबद्ध किया है। उनमें मुख्यतः राघवाभ्युदय, तिकुनाकृत रामायण, संक्षेप रामायण, भास्कर रामायण, रंगनाभ्योत्तर रामायण, कल्पवृक्ष आदि का नाम उल्लेखनीय है।

तामिल भाषा में कंब कवि द्वारा रचित कंब रामायण प्राचीन रामायण है। इसके अतिरिक्त जितनी भी रामायण हैं, वे सब कंब रामायण के अनुसार हैं।

असमिया भाषा में श्री रामचन्द्र का आदर के साथ उल्लेख है। गीति-रामायण और लोक मानस सुप्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

मलयालम भाषा में कन्नास रामायण और केरल रामायण प्राचीन एवं लोकप्रिय रचनाएं हैं।

संस्कृत में रामचरित–वेदों में ऋग्वेद बहुत प्राचीन ग्रंथ माना जाता है इसमें भी रामचन्द्र का उल्लेख आता है। योग वासिष्ठ में विशेषतः राम का वर्णन किया गया है। आदि कवि वाल्मीकि ने संस्कृत में रामायण की रचना की। भवभूति, क्षेमेन्द्र आदि ने रामायण की रचना की। इसी प्रकार रामचरित, जानकीहरण, रामायणमंजरी, अभिषेक नाटक, उत्तररामचरित बाल-रामायण, आदि अनेक नामों से विभिन्न कवियों ने रामायण की रचना की है।

अन्य भाषाओं में रामायण–पंजाबी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, ब्रज, काश्मीरी, मराठी, उड़िया में भी रामायण है। हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदासजी की रचना प्रसिद्ध है। मराठी में मोरोपन्त ज्ञानेश्वर की, कृतियाँ प्रसिद्ध हैं। संहिता भाष्यों में, अध्यात्म एवं पुराणों में भी इस पवित्र चरित को स्थान मिला है। संहिता शास्त्रों में हिरण्यगर्भ संहिता, शुकसंहिता, महाशंभु संहिता, ब्रह्मसंहिता, सदाशिवसंहिता, वसिष्ठसंहिता, अगस्त्यसंहिता, आदि में रामचरित का उल्लेख है। कल्किपुराण, पद्मपुराण, कूर्मपुराण, धर्मपुराण, वैवर्तपुराण, मार्कंण्डेय पुराण, वाराहपुराण, वामनपुराण, स्कंदपुराण, आदि पौराणिक साहित्य में भी इस कथा की विविध रूप में चर्चा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रामायण की विशेषता–इतनी लोकप्रिय होने से इसमें कुछ विशेषता होनी चाहिये। रामायण के प्रमुख पात्र राम, लक्ष्मण, सीता व रावण हैं। इनकी महानता का दिग्दर्शन कराने के लिये, रामायण के कुछ प्रसंगों का यहां उल्लेख करेंगे।

१. रावण शान्तिनाथ चैत्यालय में बहुरूपिणी विद्या को सिद्ध कर रहा था हनुमान, सुग्रीव आदि ने रामचन्द्रजी से कहा कि रावण बहुरूपिणी विद्या सिद्ध कर रहा है और अगर वह उसने सिद्ध करली तो रणभूमि में वह अनेक रूप धारण करके आवेगा जिससे असली रावण को पहचानना मुश्किल हो जावेगा और हम युद्ध में हार भी सकते हैं। अतएव हमें आज्ञा देवें कि हम विघ्न डालें जिससे वह विद्या सिद्ध नहीं कर सके। रघुवीर ने बड़े शान्त स्वर में कहा कि रावण धर्मस्थान में आराधना कर रहा है, उसमें विघ्न डालने की मैं स्वीकृति नहीं दे सकता। भले ही इसके फल-स्वरूप मैं युद्ध हार जाऊं और सीता को पाने से वंचित रह जाऊं। ऐसे थे रघुवीर। उनकी सात्विक वृत्ति के आगे किसी की भी नहीं चली।

२. समुद्र के किनारे राम आराधना कर रहे थे कि अचानक विभीषण वहां आ गया और अपनी आप बीती सुनाने लगा। रामचन्द्र ने पूरी बात सुन कर लक्ष्मण से कहा कि समुद्र से जल लाकर इनका लंका का राज्याभिषेक कर दो। सभी स्तब्ध रह गये। लक्ष्मण भी कुछ हिचके, पर राम के पुनः कहने पर उन्होंने अभिषेक कर दिया। तब हनुमान ने कहा कि आपने विभीषण की परीक्षा लिये बिना ही उसका राज्याभिषेक कर दिया। रामचन्द्र ने उत्तर दिया कि कोई अकस्मात् आता है और मेरी शरण स्वीकार करता है तो उसको अभयदान देना मेरा कर्त्तव्य है। हनुमान के पुनः पूछने पर कि अगर कभी रावण भी आपकी शरण में आ जाय तो? राम ने मुस्कराते हुवे कहा कि लंका का राज्य तो विभीषण को दे चुका अब अगर रावण आता है तो अयोध्या का राज्य तैयार है। इतने उदात्त थे, वे महापुरुष, दूरदर्शी भी थे। उन्होंने भविष्य को ताड़ लिया था।

३. सीता के अपहरण से राम बहुत दुखी हो गये थे। सीता को ढूंढते, वह वन-वन फिर रहे थे। रास्ते में उन्हें कुछ आभूषण मिले, राम ने लक्ष्मण को कुंडल दे कर पूछा कि लक्ष्मण क्या ये कुंडल सीता के हैं? लक्ष्मण ने इनकार किया कि मैं नहीं जानता तो राम ने कंकण का टुकड़ा देकर उसे पहचानने को कहा, तब भी लक्ष्मण ने वही उत्तर दिया। राम को शंका हो गई क्योंकि राम ने उन आभूषणों को पहचान लिये थे। इन्हें सीता ने इस कारण गिरा दिये थे कि कभी राम को मिल गये तो वे जान जावेंगे कि सीता किधर गई है। भाई की शंकाशील मुद्रा देख कर लक्ष्मण ने कहा कि भाई मैं तो प्रतिदिन सीतामाता के चरण छूता था, आपके पास उनके पांव की कोई वस्तु हो तो बतलावें। मैं पहचान लूंगा। क्या ऐसा शील-संवर्धन आज के नवयुवकों में पाया जाता है?

४. शंभुकुमार की माता रामचन्द्र और लक्ष्मण के रूप को देख कर उनकी ओर आकृष्ट हो गई। परन्तु राम और लक्ष्मण उसके हाव-भाव व उन्हें मोहित करने के प्रयासों से रंचमात्र भी विचलित नहीं हुवे। आखिर अपूर्व सुन्दरी उस रावण-भगिनी को निराशा ही हाथ लगी।

५. शंभुकुमार सूर्यहास खड्ग को सिद्ध करने के लिये १२ वर्षों से तपस्या कर रहा था। आखिर उसकी तपस्या सफल हुई और खडग आकाश से नीचे उतरने लगा। शंभुकुमार उसे ले इसके पहले लक्ष्मण ने उसे अपने अधिकार में कर लिया और उसकी तेज धार की परीक्षा करने लिये बांस के झुंड पर उसे चला दिया। न केवल वह बांस का झुंड ही कट कर गिरा बल्कि पास खडा हुवा शंभु-कुमार भी उसकी चपेट में आ गया और उसके दो टुकड़े हो गये। फलितार्थ यह हुवा कि १२ वर्ष की तपस्या के बाद प्राप्त खड्ग को वह अपने कब्जे में नहीं रख सका और वह अनायास ही लक्ष्मण को प्राप्त हो गया। यह कर्म की विचित्रता ही है। किस समय कौनसा कर्म उदयमान हो जाय यह कहा नहीं जा सकता।

६. नवमास की गर्भिणी सीता को किसी लोकोपवाद के भय से रामचन्द्र ने छोड़ने का तय कर लिया। उनका दोहला था कि वे तीर्थयात्रा करेंगी। सो तीर्थयात्रा कराने के बहाने सीता को ले जा कर वन में छोड़ आने के लिये राम ने लक्ष्मण को कहा। पर लक्ष्मण निर-पराधिनी सीतामाता को दंड देने को राजी नहीं हुवा। तब राम अपने सेनापति को आदेश देते हैं कि सीता को तीर्थयात्रा के बहाने ले जा कर दंडकारण्य में छोड़ आओ। सेनापति सीता को लेकर दंडकारण्य जाता है और वहां सीता को उतार देता है। जब सीता यह कहती हैं कि यह तो तीर्थस्थान नहीं है तो रोता हुवा सेनापति कहता है कि अब यह जंगल ही आपके लिये तीर्थस्थान है क्योंकि लोकोपवाद के भय से स्वामी ने आपको त्याग दिया है। सीतादेवी सोचती है कि मेरे अशुभ कर्मों का उदय हुआ है, उसका फल तो मुझे भुगतना ही पड़ेगा। वापस लौटते हुवे सेनापति को वह एक संदेश राम के लिये देती है कि आपने लोकोपवाद के भय से मुझे तो त्याग दिया परन्तु इसी लोकोपवाद के भय से कहीं धर्म को मत छोड़ देना। प्रजापालन में ढील न हो। यह उस सती का चरित्र है जिसने आपत्ति के समय भी पति-हित का ध्यान रक्खा। वास्तव में वह परम शीलवती थी।

७. लव-कुश की उत्पत्ति हो गई। युद्ध के बहाने से नारद ने रामचन्द्र से उनको मिलाया। पति के चरण छू कर सीता भी राम के पास खड़ी हो गई। राम ने कहा देवी, दूर खड़ी रहो, अभी तुम्हारी परीक्षा नहीं हुई है। सीता के सिर पर तो पहाड़ टूट पड़ा। सोचने लगी कि दूसरों को शंका हो तो हो, परन्तु मेरे पतिदेव को भी मेरे शील पर शंका है। उन्हें उसी समय संसार से वैराग्य हो गया, परन्तु बोली कि परीक्षा ले लें।

दूसरे दिन विशाल अग्निकुंड रचा गया। सीता को उसमें प्रवेश करना था। अपार भीड़ एकत्रित हो रही थी। तभी आकाश में जाते हुवे दो देवों ने इस भीड़ को देखा। जब उन्हें पता लगा कि एक सती के शील की परीक्षा होने जा रही है तो उन्होंने सोचा कि सती को परीक्षा में सफल होना ही चाहिये, नहीं तो शील का महत्व और महिमा संसार से उठ जाएगी।

(शेष पृष्ठ १३३ पर)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org